डॉ० चतुर्भुज के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास–दृष्टि मिथक और कल्पना

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

के

मानविकी संकाय (हिन्दी)

में

पीएच. डी. उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध–प्रारूप

2024

शोध पर्यवेक्षक

डॉ० रूपेन्द्र कुमार झा

सहायक प्राचार्य

हिन्दी विभाग

सी. एम. कॉलेज, दरभंगा

शोधार्थी

रिंकू कुमारी

पैट क्रमांक– E2209028

हिन्दी विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप

मानविकी संकाय (हिन्दी)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोध–शीर्षक का नामः–

डॉ० चतुर्भुज के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास–दृष्टि मिथक और कल्पना

1. भूमिकाः–

साहित्य को दो वर्गों में विभाजित किया गया है, श्रव्य और दृश्य। नाटक को दृश्य के अन्तर्गत रखा गया है। वस्तुतः नाटक में साहित्य के दोनों रूपों का समावेश होता है। जब नाटक आलेख के रूप में होता है तो वह श्रव्य रूप में होता है किन्तु जब वह मंचित होता है तो कार्यान्तरित होकर दृश्य रूप में वह उपस्थित हो जाता है। अगर नाटक अपने मूल चरित्र में दृश्य साहित्य है तो शब्द के सही अर्थ में वही नाटककार सफल सिद्ध हो सकते हैं जिनके नाटक संख्यात्मक रूप से अधिक–से–अधिक मंचित हुए हों। इतना ही नहीं जिनके नाटक अधिक–से–अधिक सुगमतापूर्वक मंचित किए जा सकते हों। रंगकर्म की भाषा में जिनके नाटक रंगमंच की दृष्टि से सफल हों, वही नाटककार श्रेष्ठ हो सकते हैं। इस दृष्टि से चतुर्भुज हिन्दी के श्रेष्ठ नाटककार हैं क्योंकि इनके नाटक संपूर्ण हिन्दी–क्षेत्र विशेषकर बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक मंचित होते रहे हैं। किन्तु साहित्यिक पूर्वाग्रह का जबर्दस्त उदाहरण हैं चतुर्भुज के नाटक। हिन्दी नाट्य आलोचना में चतुर्भुज का स्थान एक सिरे से गायब है।

संभव है कि चतुर्भुज के नाटकों में आलोचकों को साहित्यिक गरिमा का अभाव महसूस होता हो या नाटक के साहित्यिक प्रतिमान पर चतुर्भुज के नाटक खरे न उतरते हों या कि उनके नाटकों में कलात्मकता की कमी महसूस होती हो। इस दृष्टि से सर्वप्रथम चतुर्भुज के नाटकों की समीक्षा आलोचना के प्रतिमान पर करने की आवश्यकता है। दूसरी बात यह कि अगर यह मान भी लिया जाय कि

चतुर्भुज के नाटक साहित्य के निष्कर्ष पर खरे नहीं उतरते हैं तो भी इस सच्चाई से तो आँखें नहीं मोड़ी जा सकती हैं कि उनके नाटक हिन्दी क्षेत्र में अत्यंत लोकप्रिय हैं। आज लोकप्रिय साहित्य की समाजशास्त्रीय व्याख्याएँ की जा रही है। साहित्य की दृष्टि से न सही तो लोकप्रिय साहित्य की दृष्टि से ही सही, चतुर्भज के नाटकों का विश्लेषण आवश्यक है।

ध्यान देने की बात यह है कि चतुर्भुज ने कुल 28 नाटक और दो एकांकी संग्रह की रचना की है। इन्होंने पौराणिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक सभी तरह के नाटक लिखें। आश्चर्य और मुख्य बात यह है कि इतने विपुल और विविध नाट्य साहित्य की रचना करने के बावजूद इनका नाम हिंदी के नाटककारों में नहीं लिया जाता। उक्त शोध कार्य की मूल समस्या इन कारणों की पड़ताल कर चतुर्भुज के नाटकों का सम्यक विश्लेषण करना है।

चतुर्भुज ललित नारायण विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्नातकोत्तर संगीत एवं नाट्य विभाग में विद्वान शिक्षक के रूप में जाने जाते थे। यह विश्वविद्यालय के लिए सौभाग्य की बात थी कि इतने बड़े नाटककार यहाँ शिक्षण–कार्य कर चुके हैं। इस विश्वविद्यालय की शोधार्थी होने के नाते मैंने इस चुनौती को एक जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार किया है कि चतुर्भुज के नाटकों का वैशिष्ट्य प्रतिपादित कर, उन्हें हिन्दी के श्रेष्ठ नाटककारों के रूप में प्रतिष्ठित करूँ।

वर्ष 2007 में स्वतंत्रता के महासंग्राम 1857 का डेढ़ सौंवा वर्ष बीता था। इस उपलक्ष्य में सरकारी तथा गैर सरकारी कई कार्यक्रम संपादित हुए थे। पत्रिकाओं ने इस विषय पर महाविशेषांक निकाले। लेकिन कदाचित कम लोगों को मालूम होगा कि चतुर्भुज ने सिरीज में 1857 के महासंग्राम के अमर नाटकों/नायिकाओं पर नाटक लिखा है। कुंवर सिंह, पीर अली, झाँसी की रानी, बहादुरशाह आदि इस दृष्टि से इनकी विशिष्ट रचनाएँ हैं। चतुर्भुज हिन्दी के ऐसे विरले रचनाकार हैं जिन्होंने 1857 के महासंग्राम को केन्द्र में रखकर इतनी रचनाएँ की हैं। इस दृष्टि से भी चतुर्भुज के नाटकों की पड़ताल आवश्यक है।

2. प्रस्तावित शोध प्रारूप की आवश्यकता और उपयोगिताः—

चतुर्भुज के नाटक जितने नाटक हैं, उससे अधिक वे इतिहास हैं। आज की पीढ़ी की समस्या यह है कि वह अपना इतिहास ज्ञान भूलता जा रहा है। चतुर्भुज के नाटक यथा, कलिंग—विजय, सिकन्दर—पोरस, सिराजुदौला, मीरकासिम आदि ऐतिहासिक नाटक हमारे इतिहास संबंधी ज्ञान को मांजने में अद्‌भुज रूप से सहायक हो सकते हैं। रावण, कंस वध, श्रीकृष्ण, कृष्ण कुमारी कर्ण, मेघनाद, भीष्म प्रतिज्ञा जैसे पौराणिक नाटक हमारी अक्षुण्ण परंपरा और संस्कृति संबंधी ज्ञान को विस्तार देने में सहायक हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त बाबू कुंवर सिंह, पीर अली तथा झांसी की रानी सदृश्य नाटक हमारे प्रथम स्वाधीनता आंदोलन संबंधी ज्ञान को मजबूत आधार प्रदान करते हैं। चतुर्भुज के सभी ऐतिहासिक नाटकों का अध्ययन किया जाएगा। चतुर्भुज के प्रमुख ऐतिहासिक नाटक इस प्रकार हैं—1. सिकन्दर—पोरस, 2. पीर अली, 3. झांसी की रानी, 3. शिवाजी, 4. पाटलिपुत्र का राजकुमार, 5. बहादुरशाह, 6. नूरजहाँ, 7. कुंवर सिंह, 8. सिराजुधौला, 9. मीरकासिम, 10. कलिंग विजय, 11. भगवान बुद्ध, 12. कालशर्पिणी, 13. टीपू सुल्तान। इन तेरह ऐतिहासिक नाटकों के अतिरिक्त उनके अन्य पौराणिक एवं सामाजिक नाटकों का भी प्रस्तावित शोध कार्य के दौरान अध्ययन किया जाएगा।

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में कहा जा सकता है कि प्रस्तावित शोध प्रारूप का शीर्षक **"डॉ० चतुर्भुज के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास—दृष्टि मिथक और कल्पना"** भविष्य में आवश्यक और उपयोगी सिद्ध होगा।

3. प्रस्तावित शोध प्रारूप का महत्त्वः—

प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य तीस—तीस नाटकों की रचना कर चुके चतुर्भुज के नाटकों की विशेषताओं को रेखांकित कर उन्हें श्रेष्ठ नाटककार सिद्ध करना है। कारण हिन्दी के विद्वानों और आलोचकों ने इतने बड़े नाटककार की घोर उपेक्षा की है। चतुर्भुज का महत्व इतिहास के गर्भ में जाकर वहाँ की मानवीय संवदेना को व्यक्त करना है। इनके नाटकों में इतिहास दृष्टि के साथ—साथ कल्पना और मिथक का मणिकांचन उपयोग हुआ है। 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' में अशोक की पत्नी तिष्यणसिता के अद्‌भुत संवेदनशील चरित्र को चतुर्भुज ने आकार दिया

है। खलनायिका के रूप में इतिहास सिद्ध स्त्री–पात्र में इस तरह की संवेदना का संचार चतुर्भुज को अलग कोटि का नाटककार सिद्ध करता है। शोध कार्य का महत्त्व चतुर्भुज के नाटकों में विन्यस्त इतिहास बोध की पड़ताल करना है।

आज के इस भूमंडलीकरण के दौर में हम सांस्कृतिक गुलामी के कगार पर खड़े हैं। हम किस संधि पर हस्ताक्षर करें या न करें, हम अपनी संस्कृति को किस रूप में देखें–परखें, इसका निर्धारण करने के लिए अमेरिका सतत् तैयार है। ऐसे विकराल समय में हमें अपने इतिहास में भारतीयता और प्रगतिशील मूल्यों की खोज करना सर्वाधिक प्रासंगिक लगता है। चतुर्भुज के ऐतिहासिक नाटकों से गुजरते हुए हम इन मूल्यों को आसानी से पा सकते हैं और पश्चिमी ताकतों से दो–दो हाथ करने की मानसिक खुराक भी प्राप्त कर सकते हैं। इस दृष्टि से उक्त शोध कार्य की प्रासंगिकता बनी हुई है।

4. पूर्वकृत शोध कार्यः–

चूँकि चतुर्भुज अभी पर इक्का–दुक्का शोध को छोड़कर कोई विशिष्ट शोध–कार्य नहीं हुए हैं। बतौर शोधार्थी चतुर्भुज के नाटकों पर आधारित कोई पुस्तक भी अवलोकनार्थ नहीं मिली है। इस दृष्टि से यह शोध–कार्य नया और यथासाध्य मौलिक कार्य ही होगा।

5. शोध के आधार ग्रंथः–

प्रस्तावित शोध कार्य के दौरान आधार ग्रंथ के रूप में चतुर्भुज रचनावली के तीनों खण्डों का उपयोग किया जाएगा।

6. शोध की परिकल्पनाः–

शोध–परियोजना की मूल परिकल्पना यह है कि चतुर्भुज हिन्दी के विशिष्ट ऐतिहासिक नाटककार हैं। इनके नाटकों में भारतीय इतिहास की अद्‌भुत और विराट् विरासत मौजूद हैं। इन नाटकों में जहाँ एक ओर सम्पन्न इतिहास–दृष्टि है, वहीं गंभीर साहित्यिक कलात्मक अनुभूति भी। ऐसे ऐतिहासिक नाटककार के नाटकों की सम्यक आलोचना और समीक्षा मेरी परिकल्पना को परिपुष्ट करेंगी।

7. प्रस्तावित शोध की प्रविधिः–

सर्वप्रथम चतुर्भुज के सभी नाटकों का अध्ययन किया जाएगा। तत्पश्चात् इतिहास पुस्तकों से नाटक में घटित घटनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। इन तुलनाओं के आधार पर चतुर्भुज के नाटकों की ऐतिहासिकता को परखने की चेष्टा की जाएगी। इसी आधार पर उनके नाटकों में कल्पना तत्व और मिथक संबंधी अवधारणाओं को स्पष्ट करने की चेष्टा कर कुछ ठोस नतीजे निकाले जाएंगे। शोध कार्य में शोध–पद्धति के आरोही क्रम की पद्धति अपनायी जाएगी।

8.शोध अध्यायों का विभाजनः–

शोध कार्य को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक ढ़ंग से सम्पादित करने के लिए निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया जाएगाः–

	भूमिका
अध्याय – 1 :	चतुर्भुज के नाटकः सामान्य परिचय
अध्याय – 2 :	चतुर्भुज के नाटकों में इतिहास–दृष्टि
अध्याय – 3 :	चतुर्भुज के नाटकों में मिथक योजना
अध्याय – 4 :	चतुर्भुज के नाटकों में कल्पना तत्व एवं रंगमंचीयता
अध्याय – 5 :	चतुर्भुज के नाटकों की प्रासंगिकता
	उपसंहार

9. प्रस्तावित शोध ग्रंथों की सूचीः–

(क.) आधार ग्रंथ–सूची

1. चतुर्भुज रचनावली, खण्ड–एक, समय प्रकाशन, दिल्ली–2003.
2. चतुर्भुज रचनावली, खण्ड–दो, समय प्रकाशन, दिल्ली–2003.
3. चतुर्भुज रचनावली, खण्ड–तीन, समय प्रकाशन, दिल्ली–2005.

(ख.) संदर्भ सूची

1. गिरीश रस्तोगी, रंग–भाषा, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय बहावलपुर हाउस नई दिल्ली–110 001 प्रथम संस्करण–1999

2. प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, मिथक और भाषा, प्रकाशकः दिलीप कुमार मुखर्जी अशुतोष बिल्डिंग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता–700 073 प्रकाशन काल–1981
3. रमेश गौतम, मिथकीय अवधारणा और यथार्थ, राधारानी प्रकाशन, 29/61, गली तं–11 विश्वास नगर दिल्ली–110 032 प्रथम संस्करण–1977
4. राकेश वत्स, सठोत्तरी हिन्दी नाटकों का रंगमंचीय अध्ययन, हिन्दी बुक सेंटर, दिल्ली, 1995
5. रत्नकुमार पांडेय (सं), साहित्य सौंदर्य और संस्कृति, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वारणासी, संस्करण–1995
6. सनत कुमार, समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच, सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभ नगर, 2001
7. डॉ. मदन मोहन शर्मा, स्वातंत्रयोत्तर युगीन परिप्रेक्ष्य और नुक्कड नाटक एक मूल्यांकन, पार्श्व प्रकाशन अलाहाबाद, 1992
8. डॉ. पि.ए.शमीम अलियार, समकालीन नाटक दिशा और दशा, जवाहर पुस्तकालय मथुरा, प्रथम संस्करण–2007
9. डॉ. शिवकुमार मिश्र, साहित्य और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, 215, दरियागंज, नयी दिल्ली–110 002
10. डॉ. विकल गौतम, हिन्दी नाटक रंगशिल्प दर्शन, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 2000
11. डॉ. परमलाल गुप्त, आज का हिन्दी नाटक और रंगमंच, नई कहानी, इलाहाबाद, 1997
12. डॉ. परवीन अख्तर, समकालीन हिन्दी नाट्य परिदृश्य, विकास प्रकाशन 31/सी विश्व बैंक बर्श, कानपुर–27 प्रथम संस्करण–2007
13. डॉ. रामकुमार गुप्त, आधुनिक नाटक और नाट्यकार, जवाहर पुस्तकालय असकुंडा बाजार मथुरा संस्करण–1973
14. डॉ. शेखर शर्मा, समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक, भावना प्रकाशन, पटपटगंण दिल्ली–110 092, प्रथम संस्करण–1998

15. डॉ. सरजु प्रसाद मिश्र, नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर संस्करण–1980
16. डॉ. सत्यवती त्रिपाठी, आधुनिक हिन्दी नाटक में प्रयोगधार्मिता, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण–1990
17. डॉ. उषापुरी िवाचस्पति, मिथक उद्भव और विकास तथा हिन्दी साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23, दरियागंज, नयी दिल्ली–110 002 प्रथम संस्करण–1986
18. डॉ. देवेन्द्र स्वामी, आधुनिक नाटकः दृष्टि एवं शिल्प, भावना प्रकाशन, पटपड़गंज, दिल्ली–2006
19. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी
20. डॉ. नगेन्द्र, मिथक और साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23, परियागंज नयी दिल्ली–110 002 प्रथम संस्करण–1984
21. गोविन्द चातक, आधुनिक हिन्दी नाटकः भाषिक और संवादीय संरचना, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली–1982
22. लवकुमार लवलीन, साठोत्तर हिन्दी नाटककार, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 1998

शोध पर्यवेक्षक
डॉ० रूपेन्द्र कुमार झा
सहायक प्राचार्य
हिन्दी विभाग
सी. एम. कॉलेज, दरभंगा

शोधार्थी
रिंकू कुमारी
पैट क्रमांक– E2209028
हिन्दी विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा